खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 65-67
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.11
SJIF (2021) : 7.247

शोध पत्र

Comparative analysis of depression in men and women

Dinesh Kumar
Department of Psychology, P.B.P.G. College, Pratapgarh City, Pratapgarh-230 002, U.P., India
dineshpbpg13@gmail.com

Received: 31-08-2022, Accepted: 27-09-2022

Abstract- A comparative study of depression was studied between male and female groups. A group of 80 persons was taken in which there were 40 male and 40 female and each group included from both male and female. 20 subjects were taken in each treatment and each subject was treated individually. Two ways ANOVA was applied on the data obtained. The mean of 25-30 years and 35-40 years male and female.

Key words- depression, two wayANOVA

पुरूष एवं महिला वर्ग में विषाद का तुलनात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार
मनोविज्ञान विभाग, प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ सिटी, प्रतापगढ़–230 002, उ0प्र0, भारत
dineshpbpg13@gmail.com

सार– प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पुरूष एवं महिला वर्ग में विषाद का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु 80 व्यक्तियों का चयन किया गया। टूवे एनोवा का प्रयोग किया गया जिनमें 40 पुरूष तथा 40 महिलाएँ थीं तथा समूह में 25–30 एवं 35–40 आयु वर्ग से ये लिये गये। 25–30 वर्ष का मध्यमान 155.375 तथा 35–40 वर्ष का मध्यमान 157.25 पाया गया। 25–30 आयु की अपेक्षा 35–40 वर्ष का मध्यमान अधिक पाया गया। जिनमें सार्थक अन्तर था।

बीज शब्द– विषाद, टूवे एनोवा

1. **परिचय**– जब व्यक्ति किसी कार्य में असफलता या हानि का अनुभव करता है अथवा किसी दुखद या नकारात्मक घटना का सामना करता है तो उसमें उदासी एवं तनाव के लक्षण पड़ सकते हैं, इस मनोदशा को ही विषाद कहा जाता है। कारसन और उसके साथियों ने 2000 में बताया कि ''विषाद वह संवेगात्मक अवस्था है जिसमें अत्यधिक उदासी एवं खिन्नता के लक्षण प्रदर्शित होते हैं।'' सारासन एवं सारासन (2000) ने कहा कि ''विषाद किसी हानि या तनाव मुक्त घटना के कारण उत्पन्न व्यापक उदासी की मनः स्थिति है परन्तु वह अपेक्षाकृत दीर्घ समय तक बनी रहती है। इसमें व्यक्ति में अनुचित सोच पैदा हो जाती है जिसके कारण वह प्रत्येक घटना को संकट के रूप में देखने लगता है।'' क्लार्कबेक एवं बेक (1994) ने अपने अध्ययन में पाया कि विषाद रोगियों में से 92% लोग ऐसे होते हैं जिन्हें अपनी जिन्दगी में कोई मुख्य अभिरूचि नहीं रह जाती है तथा 64% लोग ऐसे होते हैं जिनमें दूसरे लोगों के प्रतिभा व शून्यता उत्पन्न हो जाती है। हेन्डरसन (1992) ने अपने अध्ययन में बताया कि जिन व्यक्तियों का सामाजिक समर्थन कम प्राप्त होता है, उनमें विषाद उत्पन्न होने का जोखिम अधिक होता है। ऐसे लोग थोड़ी सी ही तनावग्रस्त स्थिति उत्पन्न होने पर विषाद व्यवहार करना शुरू कर देते हैं।

2. **उद्देश्य**– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पुरूष एवं महिला समूह के विषाद का अध्ययन करना है।

3. **परिकल्पना**– पुरूष एवं महिला समूह पर विषाद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
   1. 25–30 आयु वर्ग एवं 35–40 आयु वर्ग पर विषाद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
   2. पुरूष एवं महिला वर्ग के आयु स्तर 25–30 एवं 35–40 के मध्य अन्तक्रिया में सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

4. **अभिकल्प**– वर्तमान अध्ययन में 2X2 द्विकारक अभिकल्प स्वतन्त्र समूह का प्रयोग किया गया है जिनमें प्रथम परिवर्त्य पुरूष एवं महिला

तथा आयु वर्ग के दो प्रकार 25–30 व 35–40 लिए गये।

5. **प्रतिदर्श**– यह अध्ययन 80 व्यक्तियों पर किया गया, जिसमें 40 पुरूष तथा 40 महिलाएँ थीं। इनमें 25–30 वर्ष के 20 पुरूष व 20 महिलाएँ तथा 35–40 वर्ष के 20 पुरूष व 20 महिलाएँ सम्मिलित की गयीं।

6. **सामग्री / मापनी**– विषाद के स्तर का मापन करने के लिए डॉ0 शमीम करीम व डॉ0 रामा तिवारी (1986) द्वारा बनायी गई विषाद मापनी प्रयुक्त की गयी।

7. **विश्वसनीयता**– विषाद परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक +0.89 पाया गया।

8. **वैधता**– विषाद परीक्षण की वैधता +0.82 पायी गयी।

9. **प्रशासन प्रक्रिया**– सर्व प्रथम हमनें प्रयोज्यों को सहज वातावरण में बैठाया गया फिर उनसे सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये तत्पश्चात् उनसे कहा कि मैं जो आपको प्रपत्र दे रहा हूँ, इनमें 96 कथन हैं। जिनमें विकल्प (i) बिल्कुल नहीं, (ii) थोड़ा सान हीं, (iii) सामान्यतः, (iv) अधिक (v) पूर्णतः आपको कथनों का उत्तर इन विकल्पों में से किसी एक का चयन कर व्यक्त करना है, जो कथन आपको उचित लगता है, उसे कोष्ठक में सही का निशान लगाना है।

10. **प्राप्तांक**– विषाद मापनी में 96 कथन हैं। प्रत्येक कथन के पांच विकल्प हैं, जिनके प्राप्तांक क्रमशः 0, 1, 2, 3, 4 हैं।

11. **परिणाम**– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पुरुष एवं महिला समूह के विषाद का अध्ययन करना था। अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों के सांख्यिकी विश्लेषण में टूवे एनोवा का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणाम निम्न **तालिका–1** में दर्शाया गया है।

तालिका–1

प्रसारण के स्रोत Source of Variance	वर्गों का योग S.S.	स्वतंत्रता के अंश D.F.	M.S.	F-Ratio
A. (पुरूष एवं महिला)	2964.613	1	2964.613	100.83
B. (25–30 वर्ष, 35–40 वर्ष)	70.313	1	70.313	2.39
A.B	112.812	1	112.812	3.83
त्रुटि	2234.45	76	29.4	
योग	**5382.188**	**79**		

0.95 (1, 76) पर F का मान 3.97
0.99 (1, 76) पर F का मान 6.96

12. **निष्कर्ष**– प्रस्तुत शोध पत्र में पाया गया कि पुरूष एवं महिला समूह पर विषाद का सार्थक अन्तर पाया गया। देसाई और उसके साथियों ने (2000) में पुरूष व महिलाओं पर अध्ययन किया और पाया कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अवसाद दोगुना होता है। आयुवर्ग (25–30) तथा (35–40) में अवसाद में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

References

1. Carson, R. C. et al. (2000) Abnormal Psychology and Modern Life, Pearson Education.
2. Sarason, I. J. and Sarason, B. R. (2005) Abnormal Psychology, Pearson Education.
3. Clerk, Beck and Beck (1994) Modern Abnormal Psychology, Mood Disorder, p.440.

4. Henderson (1992) Modern Abnormal Psychology, p. 441.
5. Desai, H. D. and John, M. W. (2000) Depression in Women, pp. 325-441.
6. Singh, R. N.; Qureshi, A. N. and Bhardwaj, S. S. (2013) Foundations of Psychopathology, Agrawal Publication, Agra, pp. 244-275.
7. Singh, A. K. (2000) Modern Abnormal Psychology, MotilalBanarasidas Publication, Delhi, pp. 437-479.